ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पालतू पशुओं में सर्रा रोग - कारण एवं निवारण

डॉ. देवेन्द्र प्रसाद पटीर, डॉ. विनय किशोर तिवारी एवं डॉ. दीपक कुमार पंकज
पीएचडी शोधार्थी, परजीवी विभाग, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, बरेली

पालतू पशुओं में सर्रा एक भयानक जानलेवा बीमारी हैं, भारत के सभी राज्यों में इसका प्रकोप देखने को मिलता है। सर्रा का वास्तविक अर्थ है "सड़ा हुआ" क्योंकि इस बीमारी में पशु धीरे-धीरे कमजोर तथा अक्षम्य होते चले जाते है , जिसके कारण राष्ट्रीय पशुधन अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है। 2017 में प्रकाशित शोध के अनुसार प्रतिवर्ष 44749 मिलियन रुपये का नुकसान इस रोग के कारण हो रहा है। अत्यधिक नुकसान को मद्देनजर रखते हुए बीमारी के कारण व रोकथाम को जानना जरूरी है।

रोग का कारण

इस रोग का रोगकारक एककोशिकीय रक्त परजीवी "ट्रिपनोसोमा इवान्साइ" है, जो रक्त के प्लाज्मा मे पाया जात है। इस बीमारी को सर्रा/ट्रिपनोसोमियासिस/ऊँटो में तिबरसा भी कहा जाता है। इसकी सर्वप्रथम खोज घोड़ों में डेरा इस्माइल खान , पंजाब प्रांत (वर्तमान पाकिस्तान) में ब्रिटिश वैज्ञानिक ग्रिफित इवांस ने सन्न 1885 मे की थी।

रोग का प्रसार

यह रोग सभी पालतू पशुओ को प्रभावित करता है, परन्तु ऊँट, घोड़े एवं कुत्तों में गंभीर लक्षणों के साथ सर्वाधिक नुकसान करता है। इसका प्रसारण मुख्यता टैबेनस वंश की मक्खियों के कारण होता है। संक्रमित पशु का खून चूसते समय मक्खी रक्त परजीवी को बीमार पशु से स्वस्थ पशु में छोड़ देती है। यधपि सर्रा वर्ष पर्यंत पशुओं में पाया जाता है , परन्तु मानसून मोसम में मक्खियों की अधिकता , सक्रियता एवं पशुओं की रोगप्रतिरोधक क्षमता में कमी के कारण सर्रा का प्रकोप बहुतायत में मिलता है। सर्रा मुख्यतः उष्णकटिबंधीय जलवायु वाले प्रदेशों में मिलता हैं , क्योंकि मक्खियों के पनपने के लिए उत्तम जलवायु एवं आवास मिल जाता है। कुत्तों एवं मांसाहारी पशुओं में सर्रा का प्रसारण संक्रमित जानवर के शिकार एवं ताजा मांस खाने से भी होता हैं।

पशुओं में रोग के लक्षण

1.ऊँटो में सर्रा

रेगिस्तानी जहाज में पाया जाने वाला भयंकर जानलेवा रोग है। यह रोग दो रूप में हो सकता है -

तीव्र अवस्था- रोग की अवधि 10-20 दिन होती है, ऊँट अचानक कमजोर हो जाता है तथा थोड़े दिनों में मर जाता हैं।

दीर्घकालीन समस्या- इस प्रवस्था में सर्रा के लक्षण अप्रत्यक्ष रहते है, तथा संक्रमण तीन साल तक रहता है , जिसके कारण इसको तिबरसा भी कहा जाता है। रुक रुक कर बुखार आना , सुस्ती -

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

कमजोरी, वजन घटना , आँखों के ऊपरी हिस्से एवं शरीर के निचले हिस्सों में सूजन आना , बाल गिर जाते हैं, त्वचा के नीचे वसा कम हो जाती हैं । नर पशुओं के अण्डकोष में सूजन आ जाती है। मादा पशुओ में गर्भपात की समस्या आती है। ऊंट का कूबड़ धीरे धीरे नष्ट होने लगता है। रक्त में परजीवियों के कारण ग्लूकोस की कमी के कारण बेचैनी बढ़ जाती हैं जो रेबीज सर्पदंश या लेप्टोस्पाइरोसिस जैसे लक्षण आते है। संक्रमण की अंतिम अवस्था में पशु की मौत हो जाती हैं।

2.घोड़ों में सर्रा

घोड़ों में भी यह बीमारी काफी खतरनाक होती है, समय पर समुचित उपचार न किया जाए तो एक सप्ताह से लेकर छः महीने के बीच में उनकी मृत्यु हो सकती है। दुर्बलता, रुक रुक कर बुखार आना, पैर व शरीर के निचले हिस्सों में जलीय त्वचा शोथ , लकवा, गर्दन व उदर क्षेत्र में सिक्के जैसे उभार आदि लक्षण पाये जाते हैं।

3.कुत्तों में सर्रा

संक्रमित कुत्ते के कण्ठ नलिका में जलीय त्वचा शोथ हो जाता हैं , जिसके कारण रेबीज रोग के समान लक्षण दिखता हैं। कॉर्निया में ओपेसिटी की वजह से आंखों का रंग नीला हो जाता है , कुत्ते के बाल झड़ने लगते है तथा दुबला पतला होकर मरियल अवस्था में पहुँच जाता हैं।

4. गाय-भैंस में सर्रा

भैंस में इसका प्रकोप गाय की अपेक्षा अधिक होता है, लेकिन इसका प्रभाव बहुत कम होता है। ये पशु अन्य पशुओं के लिए इस बीमारी के स्रोत होते हैं। अत्यधिक प्रभावित पशु में रुक रुक कर बुखार, बार बार पेशाब, खून की कमी, दुर्बलता एवं कमजोरी जैसे शुरुआती लक्षण आते है। अंतिम अवस्था में पशु गोल-गोल चक्कर लगाने लगता हैं , सर को दीवार या कठोर वस्तु से रगड़ता हैं , गर्भित पशुओं में गर्भपात भी देखने को मिलता हैं।

<u>सर्रा की पहचान</u>

- ✓ संक्रमित पशु के द्वारा लक्षण दिखाये जाने के आधार पर ।
- ✓ सुक्ष्मदर्शी द्वारा संक्रमित पशु के रक्त को कांच पट्टिका पर डाल कर परजीवी को देखा जा सकता हैं ।
- ✓ कांच की पट्टिका पर रक्त को फैला कर जिम्मसा या लैशमान अभिरंजक से अभिरंजित करके सूक्ष्मदर्शी से अवलोकन द्वारा ।
- ✓ पशु-सरोपण विधि से चूहों में रोगकारक प्रवेश कराकर ।
- ✓ आधुनिक विधियों में जैसे पी.सी आर एवं एलाईजा के द्वारा वाहक पशु में भी संक्रमण का पता लगाया जा सकता हैं ।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सर्रा का उपचार

- ✓ सर्रा के लक्षण दिखाई देने पर रोगी पशु को पशु चिकित्सक के पास दिखाना चाहिए ।
- ✓ क्यूनापयारीमिन सल्फेट **1.5** ग्राम एवं ब्यूनापाइरामिन **1.0** ग्राम (हाईटियन - **2.5** ग्राम) को **15** मिलीलीटर आसुत जल में घोलकर गर्दन व पुट्ठे पर आधी आधी मात्रा चमड़ी में लगानी चाहिए।
- ✓ ग्लूकोस की पूर्ति के लिए डेक्सट्रॉस (**25** प्रतिशत**)** प्रयोग करना चाहिए ।
- ✓ डाईमीनाजीन एसीचुरेट **7** मिग्रा प्रति किलो भार ।
- ✓ आइसोमेटामिडियम क्लोराइड **0.5** मिग्रा प्रति किलो भार या मेलारसोमिन हाइड्रोक्लोराइड औषधि का उपयोग करना चाहिए ।
- ✓ पशु के तीव्र स्वास्थ्य सुधार के लिए रक्तवर्धक एवं यकृत टोनिक देने चाहिए ।

सर्रा का नियंत्रण

- ✓ अभी तक कोई टीका बाजार में उपलब्ध नहीं है इसलिए बचाव हेतु क्यूनापयारीमिन क्लोराइड एवं आइसोमेटामिडियम क्लोराईड औषधि का **16.7%** जलीय घोल पिलाना चाहिए। इससे **4** महीने तक बचाव होता है।
- ✓ रोगग्रस्त पशु को स्वस्थ पशुओ से अलग कर देना चाहिए।
- ✓ टैबेनस मक्खी को नियंत्रित रासायनिक व यांत्रिक विधियों द्वारा किया जा सकता है ।
- ✓ यांत्रिक नियंत्रण में तेज धूप , झाडी, कचरे, मल आदि की सफाई व रासायनिक विधि में कीटनाशको का छिड़काव शामिल है ।
- ✓ महामारी से प्रभावित क्षेत्र के पशुओं की नियमित खून जाँच होनी चाहिए जिससे उचित समय पर रोग को नियंत्रित किया जा सके ।
- ✓ किसान व पशुपालको में जनजागरण अभियान द्वारा नियंत्रण में सहायता मिलती है।